संस्कार एवं शिक्षा

नमस्ते ! मेरा नाम प्रिया मिश्रा है। मेरे केन्द्र का नाम मुल्लायर प्रतिभा विकास केन्द्र है। जो मिहिरावली जिला, आयानगर में स्थित हैं। मैं शिक्षा के साथ संस्कार की मानव जीवन में महत्ता है इसके विषय में कुछ जानकारी आप सबों से साझा करना चाहती हूँ।

शिक्षा मनुष्य के जीवन का वह उपहार हैं जो व्यक्ति की दशा एवं दिशा दोनों बदल देती है और संस्कार जीवन का वह अंग है, जिसके माध्यम से मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण और विकास होता हैं। जब मनुष्य में शिक्षा एवं संस्कार दोनों का विकास होगा तभी वह परिवार, समाज और राष्ट्र के विकास की ओर अग्रसर होगा।

वैसे तो शिक्षा हमें विद्यालय एवं अन्य शैक्षणिक संस्थानों से प्राप्त हो ही जाती है.. लेकिन संस्कार (नैतिकता) हमें हर जगह नहीं प्राप्त हो सकता है।

मैं सदैव आभारी रहूँगी वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन के माननीय प्रभारी श्रीमान् वीरेन्द्र शर्मा भाई साहब जी की जिसने मुझे ऐसे कार्य के योग्य समझा एवं प्रतिभा विकास केन्द्र की आचार्या दीदी बनने का सौभाग्य प्रदान किया। जहाँ मैं आर्थिक विपन्नता से जूझ रहे विद्यार्थियों को निशुल्क शिक्षा एवं संस्कार की भेंट दे सकूं।

हालांकि मुझे संस्थान से मानधन प्राप्त होता है। परंतु एक बात यह भी मैं अपने राष्ट्र के स्वर्णिम भविष्य के लिए अपनी आने वाली पीढ़ी को शिक्षा के साथ संस्कारित होते हुए भी देखना चाहूंगी।

हमारा प्रथम कर्त्तव्य है कि हम विद्यार्थी को संस्कारित करें उसके बाद विद्यार्थी के माध्यम से उनके परिवार समाज राष्ट्र के प्रत्येक व्यक्ति को अपने सनातन, संस्कारों से जोड़ें।

प्रतिभा विकास केन्द्र – एक अनुभव

आचार्या – रुपा मंडल

सीताराम प्रतिभा विकास केन्द्र, बीरभूम , पश्चिम बंगाल

मैं ब्राह्मणबाहा नामक एक बहुत छोटे से अविकसित गाँव से हूँ। मेरा नाम रूपा मंडल है। मैंने 2021 में ब्राह्मणबाहा हाई स्कूल से 91ः अंकों के साथ माध्यमिक परीक्षा और 2023 में मयूरेष्वर हाई स्कूल से 93ः अंकों के साथ उच्चतर माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण की। अब मैं एक कॉलेज की छात्रा हूँ।

मेरे एक मित्र के माध्यम से मुझे प्रतिभा विकास केंद्र के बारे में पता चलने पर मैंने सेवाब्रती श्री सुमन लेत से संपर्क किया और उन्होंने प्रतिभा विकास केंद्र के बारे में विस्तार से बताया। फिर मैंने इसमें सेवा देने का फैसला किया।

एक दिन दोपहर में मैंने अपने गाँव का सर्वेक्षण किया और बच्चों के नाम एकत्र किए और इस योजना फिर के बारे में अभिभावकों और बच्चों के साथ भी चर्चा की कि मैं कितना कर सकती हूँ। वे यह सुनकर बहुत खुश हुए कि उनके बच्चों को कई क्षेत्रों में मुफ्त में शिक्षा और ज्ञान मिलेगा।

मैं प्रतिभा विकास केंद्र के माध्यम से छह महीने से अपने छात्रों और उनके अभिभावकों से जुड़ी हुई हूँ। अब वे सभी मेरा बहुत सम्मान करते हैं, लेकिन केंद्र खुलने से पहले वे मुझे बेहतर तरीके से जवाब नहीं देते थे। अब यह मेरी उपलब्धि है कि मैं अधिकांश ग्रामीणों के लिए एक सम्मानित महिला बन गई हूँ। मैं बच्चों को संस्कार, नियम और कानून, हिंदू शास्त्र, प्रार्थना, हमारी प्रकृति, देवी–देवताओं की भूमिका, योग की भूमिका आदि के बारे में सिखाती हूँ। हर सुबह वे अपने बड़े को प्रणाम करते हैं और फिर उचित तरीके से केंद्र में आते हैं। अब भी वे सभी रोजाना सरकारी स्कूल जाते हैं, लेकिन इस केंद्र से पहले ज्यादातर छात्र स्कूल नहीं जाते थे। हम अपने केंद्र में कई पूजा, किसी स्वतंत्रता सेनानी का जन्मदिन, हिंदू शास्त्र में ऋषि और कई कार्यक्रम मनाते हैं। सभी अभिभावक और ग्रामीण हमेशा मेरे छात्रों के साथ आगे बढ़ने के लिए मेरा समर्थन करते हैं।

सीताराम प्रतिभा विकास केंद्र के खुलने से पहले कुछ छात्र फीस लेकर ट्यूशन जाते थे, लेकिन उनके अभिभावकों ने देखा कि इस केंद्र में छात्रों की स्थिति बेहतर हो रही है, इसलिए उन्होंने ट्यूशन जाना बंद कर दिया। अब वे सभी मेरे नियमित छात्र हैं। पहले वे केक काटकर और मोमबत्तियाँ बुझाकर अपना जन्मदिन मनाते थे, अब वे अपने जन्मदिन पर पूजा और भजन करते हैं।

अपने बच्चों में सुधार देखकर और मासिक परिवार मिलन का स्पर्श पाकर उनके पिता भी पीना बंद कर देते हैं। मेरे छात्र अपने दोस्तों को हमारे केंद्र के बारे में बताते हैं और कुछ अन्य छात्र भी कभी–कभी मेरे केंद्र पर आने लगते हैं।

समस्याएँ–ग्रामीण क्षेत्र होने के कारण यहाँ छात्रों के बैठने के लिए उचित स्थान नहीं है। साफ वातावरण में हम किसी तरह काम चला लेते हैं, लेकिन बरसात के मौसम में हमें बड़ी समस्या का सामना करना पड़ता है। मानसून के मौसम में अधिकांश अभिभावक परिवार मिलन में शामिल नहीं हो पाते क्योंकि वे खेत में जाते हैं क्योंकि वे मजदूर या बटाईदार हैं।

संगठन से आचार्या के रूप में जुड़ने का अनुभव

आचार्या – रितु कश्यप
ज्ञानधारा प्रतिभा विकास केन्द्र
गंगा विहार, यमुना विहार

मेरा नाम रितु कश्यप है मैं पिछले 2 साल से केन्द्र का संचालन कर रही हूँ। मेरे केन्द्र का नाम ज्ञानधारा प्रतिभा विकास केन्द्र है। संगठन से जुड़ने का अनुभव, जिसका सीधा अर्थ है एक या एक से अधिक लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए मिलकर काम करना। किसी भी संगठन में, प्रत्येक सदस्य को एक विशिष्ट भूमिका और उत्तरदायित्व सौंपा जाता है। जिसमें हमें आचार्या की भूमिका दी गयी है।

संगठन से जुड़ने पर मैंने विभिन्न प्रकार के अनुभवों से गुजरी हूँ, जिससे हमें नए कौशल सीखने और अपने ज्ञान का विस्तार करने के साथ–साथ बच्चों में भी परिवर्तन देखने को मिला है। बच्चें जब प्रारम्भ में आते थे बहुत शोर करना, अस्त–व्यस्त रहना। आज वहीं बच्चें केन्द्र पर आने पर नमस्ते करना, जय श्री राम बोलना, व्यवस्थित रहना, चप्पल लाइन से लगाना, मंत्रों को अच्छे से पढ़ना और साथ–साथ परिवारों में भी संस्कार आयें है।

बच्चों के माता–पिता जब मासिक परिवार मिलन कार्यक्रम आते है। बच्चों में शिक्षा के साथ–साथ संस्कार देखनों को मिला है। तब वह बताते है कि बच्चों ने डनउउल.क्कल बोलना छोड़ कर माँ–पिताजी बोलते है। पैर छूते है भगवान की पूजा करतें है। अभिभावक बताते है कि बच्चों में बहुत सारे परिवर्तन हुआ है। अपने स्कूल के बच्चों को भी मंत्र सिखाते है। प्रतिभा विकास केन्द्र में बच्चों को भेजते है। मुझे उनके माता–पिता के द्वारा मासिक परिवार मिलन कार्यक्रम में बच्चों और परिवार के अनुभव सुनने के बाद मन को संतुष्टी और प्ररेणा मिलती है।

जिससे लगता है मुझे समाज में जीवन–जीने का उद्देश्य मिल गया है। मुझे वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन का आयाम प्रतिभा विकास केन्द्र की आचार्या के रूप में कार्य कर के जीवन जीने का एक नया सार मिला। मैं संगठन की जितनी भी धन्यवाद् करू उतनी कम है। अन्त में एक बात कह कर अपने बात समाप्त करूगी कि संगठन से जुड़ना सिर्फ एक कार्य या पद प्राप्त करना नहीं है, बाल्कि संगठन के उद्देश्य को पूरा करना हमारा लक्ष्य है। देश के उत्थान में मेरा योगदान एक गिलहरी के रूप में है।

आचार्य के रूप में मेरा जीवन परिवर्तनकारी अनुभव

आचार्या – ऋषिका ठाकुर
उज्जवल भविष्य प्रतिभा विकास केन्द
जिला कंझावला, नगर – प्रेम नगर

जय श्रीराम मैं ऋषिका, उज्ज्वल भविष्य प्रतिभा विकास केंद्र (वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन) में आचार्य के रूप में कार्यरत हूँ। हमारे केंद्र का मुख्य उद्देश्य समाज में जागरूकता का प्रसार करना तथा बच्चों में सुदृढ़ संस्कारों का विकास करना है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि एक सशक्त, स्वस्थ और संस्कारित समाज का निर्माण तभी संभव है, जब बच्चों को प्रारंभ से ही सही दिशा, मूल्य और नैतिक शिक्षा प्रदान की जाए।

हमारे केंद्र की विशेषता यह है कि हम बच्चों के विकास को केवल शारीरिक सीमाओं तक नहीं बाँधते, बल्कि मानसिक और आत्मिक संतुलन को भी उतना ही महत्व देते हैं। इसी विचारधारा के अंतर्गत योग, पर्यावरण जागरूकता तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमों जैसे विविध आयोजनों के माध्यम से बच्चों के सर्वांगीण विकास का निरंतर प्रयास किया जाता है।

हाल ही में आयोजित योग दिवस कार्यक्रम में बच्चों ने मंत्रोच्चारण, संकल्प, विभिन्न योगासनों एवं प्राणायाम के माध्यम से शारीरिक और मानसिक संतुलन का अनुभव किया। इस अवसर पर बच्चों ने यह जाना कि योग केवल व्यायाम नहीं है, बल्कि यह अनुशासन, आत्म–नियंत्रण और ध्यान के माध्यम से जीवन की चुनौतियों से जूझने की आंतरिक शक्ति प्रदान करता है।

पर्यावरण दिवस के अवसर पर परिवारों की सक्रिय सहभागिता ने इस कार्यक्रम को एक सामूहिक आंदोलन का रूप दिया। यह सहभागिता इस बात का सशक्त प्रमाण बनी कि जब परिवार, समाज और संस्था एक साथ मिलकर कार्य करते हैं, तो सकारात्मक परिवर्तन निश्चित रूप से संभव होता है।

वहीं संस्कार परिवार मिलन कार्यक्रम ने बच्चों, अभिभावकों और समाज के बीच आपसी संबंधों को और अधिक मजबूत किया। प्रेरणादायक गीतों, संवादों और सहभागिता के माध्यम से पारिवारिक मूल्यों तथा हमारी सांस्कृतिक धरोहर को साझा करने का सार्थक प्रयास किया गया।

आदरणीय वीरेंद्र बाबू जी के मार्गदर्शन ने केंद्र में आयोजित सभी गतिविधियों को और अधिक प्रभावशाली तथा उद्देश्यपूर्ण बनाया। साथ ही, इन कार्यक्रमों की सफलता में श्रीमती अल्पना ठाकुर जी, सोनू जी, अंगद सिंह भैया जी एवं श्रीमान सुबोध जी जैसे वरिष्ठ मार्गदर्शकों का सहयोग अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जिनके मार्गदर्शन और प्रेरणा से हमें निरंतर आगे बढ़ने की दिशा मिली।

मेरे लिए यह संपूर्ण यात्रा व्यक्तिगत रूप से भी अत्यंत समृद्ध रही है। एक छात्रा के रूप में बच्चों को सिखाते हुए मैंने स्वयं यह अनुभव किया कि जब शिक्षा और संस्कार एक साथ चलते हैं, तब बच्चों का व्यक्तित्व निखरता है और वे एक उज्ज्वल, संस्कारित भविष्य की ओर अग्रसर होते हैं।

अनुभव

आचार्या–विद्या शर्मा
शहीद भगत सिंह प्रतिभा विकास केन्द्र

मेरे यहाँ परिवार मिलन से मुझे बहुत अच्छा अनुभव मिला है। मेरे अभिभावकों का कहना है कि शहीद भगत सिंह प्रतिभा विकास केंद्र जो वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा चलाया जा रहा है, इसमें पढ़कर उनके बच्चो में काफी सुधार हुआ है एवं संस्कार आये हैं। श्रीमती ममता देवी, श्रीमती शांती देवी, एवं कई अन्य अभिभावक बहुत ही प्रशंसा करते है कि वी.आर.पी.एफ सरकारी स्कूलों के बच्चों के लिए संस्कारयुक्त निःशुल्क शिक्षा प्रदानकर काफी अच्छा कार्य कर रहे है। एक तो उनके बच्चों को संस्कार सिखाये जा रहे है, साथ ही उनके बच्चों के व्यवहार एवं पढाई में भी काफी सुधार आया है।

मेरे केंद्र की एक छात्रा, दिव्या, जो अब सातवीं कक्षा में पढ़ रही है, पिछले वर्ष वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन से कक्षा छठी में पढ़कर, पूर्व कक्षा से 101 अधिक प्राप्तांक प्राप्त किये है, और अन्य कई बच्चों के रिजल्ट में भी काफी सुधार आया है। परिवार मिलन में मेरे केंद्र की संख्या, बच्चे– 25–15 अन्य बच्चे, एवं अभिभावक और अन्य सदस्यों की संख्या भी काफी हद तक रही है।

जनवरी माह में संख्या लगभग 200 रही थी, अप्रैल माह में दो बार परिवार मिलन हुआ था, और संख्या लगभग 125 रही थी। 6 अप्रैल को परिवार मिलन हुआ उसमें श्रीमान राम बिलास जी भी उपस्थित थे। 29 अप्रैल को केंद्र संगठन प्रभारी श्रीमान वीरेन्द्र शर्मा जी आये थे और उनसे मिलकर सभी छात्रों एवं अभिभावकों को बहुत ही प्रसन्नता हुई थी। उनके द्वारा बच्चों को सुनाया गया गीत 'चन्दन है इस देश की माटी', उसको सुनकर सबको बहुत ही खुशी हुई थी। मैं उनका हृदयतल से धन्यवाद् करती हूँ।

प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चें का अनुभव

विद्यार्थी – करिश्मा
सरस्वती प्रतिभा विकास केन्द्र

मेरा नाम करिश्मा है। मैं सरस्वती प्रतिभा विकास केन्द्र जिला कंझावला की छात्रा हूँ। जब से मै यहाँ आई हूँ यहाँ केन्द्र में आते हीह म दीप प्रज्जवलन करते है यहाँ पिंकी दीदी हमें मंत्र उच्चारण के साथ प्राणायाम, आसन करना सिखाती है। और दो विषय का प्रत्येक दिन अभ्यास भी कराया जाता है। अब मैं अपना हर काम समय पर करती हूँ। मैं बहुत मन लगाकर पढाई करती हूँ। मुझे मेरा प्रतिभा विकास केन्द्र और यहाँ का माहौल बहुत पसंद है।

प्रतिभा विकास केन्द्र के बच्चें का अनुभव

विद्यार्थी के अभिभावक – सुमित्रा देवी
द्रोणाचार्य प्रतिभा विकास केन्द्र

मेरा नाम सुमित्रा देवी है मेरी बेटी राधिका द्रोणाचार्य प्रतिभा विकास केंद्र पर पढ़ने जाती हैं जब से वह केंद्र पर पढ़ने लगी है उसके अंदर काफी बदलाव आए हैं वह जो योग प्राणायाम सीख कर आती है वह हमें भी घर पर बताती है और हम सभी पूरे परिवार के साथ मिलकर उसे योग प्राणायाम को करते हैं जिससे हमारे परिवार में सभी के अंदर बहुत ही सकारात्मक बदलाव देखे हैं हम द्रोणाचार्य प्रतिभा विकास केंद्र व वनवासी शिक्षा परिवार का धन्यवाद करती हूं कि उन्होंने हमारा उचित मार्गदर्शन किया।

संगठन के द्वारा क्षेत्र में बदलाव

आचार्या – भावना सैनी
माता सावित्री बाई फुले प्रतिभा विकास केन्द्र
ब्रज प्रान्त

माता सावित्री बाई फुले प्रतिभा विकास केन्द्र पर इस वनवासी रक्षा परिवार द्वारा बहुत बदलाव देखे गये। यहाँ पर पहले सभी बच्चे पहले प्राथमिक संस्कृति के बारे में कुछ पता नहीं था। और न ही संस्कार जानते थे और न ही श्लोक मंत्र, प्राणायाम आसन, सरस्वती वंदना करना जानते थे। और न ही सुबह की दिनचर्या करना अथवा माता पिता के चरण छू ना नमस्कार करना। जब से यहाँ मंत्र अपनों से बड़े लोगो का आदर करना श्लोक बोलना सीख गए हैं यह परिवर्तन आया है।

वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन से जुड़ने के बाद सभी बच्चों में बहुत बदलाव आया है। यहां पर भी बच्चे गरीब स्थित के हैं जो अच्छी स्कूल में नहीं पढ़ सकते हैं अच्छे स्कूल में भी पढ़ने पर आजकल किसी भी स्कूल में हमारी भारतीय संस्कारात्मक नहीं सिखाए जाते हैं। बल्कि दूसरे धर्म को संस्कार सिखाए जाते हैं। इसीलिए अपने हिंदू धर्म के बच्चे आजकल कुछ भी नहीं जानते हैं। वनवासी रक्षा परिवार फाउंडेशन द्वारा प्रतिभा विकास केन्द्र योजना के द्वारा बच्चों में और उनके परिवार के सभी व्यक्ति तक संस्कार शिक्षा पहुंचे। बच्चों को 2 घंटे ट्यूशन के रूप में बच्चों को शिक्षा और अधिकार प्रदान करती है। हमारे बच्चें शिक्षा भी सीखे और संस्कार भी सीखे और बच्चों के माध्यम से बच्चों के माता–पिता भी संस्कृति के बारे में जान सकते हैं। और बच्चों के माता–पिता भी गायत्री मंत्र, महामृत्युंजय मंत्र, पुरूषार्थ जागरण मंत्र, क्षमा स्तुति मंत्र, त्रिदेव नवग्रह स्तुति मंत्र के प्रणायाम, आसान कर रहें हैं